Toppersnotes®
Unleash the topper in you

3rd – ग्रेड

अध्यापक

लेवल – द्वितीय

कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर

भाग – 4 (ब)

भाषा

हिन्दी

SIERRA INNOVATIONS

3RD GRADE LEVEL - 2

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	हिन्दी	
1.	हिन्दी वर्णमाला ज्ञान	1
	शब्द विचार	
2.	संज्ञा	7
3.	सर्वनाम	12
4.	विशेषण	14
5.	क्रिया	15
6.	अव्यय	17
	विकारी शब्द	
7.	लिंग	23
8.	वचन	28
9.	काल	31
10.	कारक	34
11.	विकारी शब्दों का रूपान्तरण	40
12.	तत्सम–तद्भव	50
13.	देशज शब्द	52
14.	एकार्थी शब्द	54
15.	अनेकार्थक शब्द	61
16.	विलोम शब्द	67
17.	पर्यायवाची	75
18.	वाक्य के लिए एक शब्द	78
19.	शब्द युग्म	84
20.	संधि	95
21.	समास	112

22.	उपसर्ग	121
23.	प्रत्यय	124
24.	वर्तनी शुद्धि एवं वाक्य शुद्धि	128
25.	वाक्य	139
26.	विराम चिह्न	141
27.	मुहावरें एवं लोकोक्तियाँ	145
28.	शब्द शक्ति	168
29.	पारिभाषिक शब्दावली	176
	हिन्दी शिक्षण विधियाँ	
1.	हिन्दी भाषा की शिक्षण विधियाँ	190
2.	भाषायी कौशल (सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना) एवं भाषायी कौशलों का विकास	223
3.	हिन्दी भाषा शिक्षण के उपागम	231
4.	हिन्दी शिक्षण में चुनौतियाँ	234
5.	हिन्दी शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री एवं उनका उपयोग	236
6.	हिन्दी शिक्षण की मूल्यांकन विधियाँ	245
7.	निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण	250

एकार्थी शब्द

अकथ	:	कुछ कहा न जा सके
अथक	:	जो थके नहीं
अकुल	:	बिना कुल के
आकुल	:	व्याकुल
अकूत	:	बिना अंदाज
आकूत	:	अभिप्राय
अग	:	अचल, पर्वत
अघ	:	पाप
अगम	:	जहाँ जाना संभव नहीं
आगम	:	शास्त्र, प्राप्ति
अचल	:	पर्वत
अचला	:	पृथ्वी
अर्चन	:	पूजा
अर्जन	:	अजर
अजर	:	देवता
अजिर	:	आँगन
अतल	:	गहरा
अतुल	:	तुलना न हो
अद्य	:	आज
आद्य	:	पहला
अतीत	:	बीता हुआ
अतीव	:	बहुत ज्यादा
अनल	:	आग
अनिल	:	हवा
अनुग	:	अनुयायी
अनुज	:	छोटा भाई
अन्तर्देशीय	:	देश के भीतर
अन्तरदेशीय	:	देशों के बीच
अनभिज्ञ	:	अनजान

अभिज्ञ	:	जानकार
अनु	:	पीछे
अणु	:	कण
अपकार	:	बुराई
उपकार	:	भलाई
अनिष्ट	:	बुरा
अनिष्ठ	:	निष्ठाहीन
अभिनय	:	नाटक खेलना
अभिनव	:	मया
अपमान	:	निरादर
उपमान	:	जिससे उपमा दी जाय
अपेक्षा	:	आशा
उपेक्षा	:	अवहेलना
अभिराम	:	सुन्दर
अविराम	:	लगातार
अभिज्ञ	:	जानकार
अविज्ञ	:	मूर्ख
अभय	:	निडर
उभय	:	दोनों
अमूल	:	बिना जड़ का
अमूल्य	:	अनमोल
अरि	:	दुष्मन
अरी	:	सम्बोधन
अवलम्ब	:	सहारा
अविलम्ब	:	शीघ्र
अवगत	:	ज्ञात
अविगत	:	अव्यक्त / दूर
अविहित	:	विधि विरुद्ध
अभिहित	:	कथित, उक्त
अवदान	:	प्रशंसित कार्य
अवधान	:	योग / ध्यान

अवधि	:	समय
अवधी	:	भाषा विशेष
अव्यय	:	जो खर्च न हो
अवयव	:	अंग/भाग
अवशेष	:	बाकी
अविशेष	:	सामान्य
अवमर्श	:	स्पर्श/संपर्क
अवमर्ष	:	आलोचना
अलि	:	भ्रमर
आली	:	सम्बोधन
अलक	:	बाल
अलिक	:	ललाट
अलोक	:	अदृश्य
आलोक	:	प्रकाश
अश्व	:	घोडा
अस्व	:	पराया
अष्म	:	जीवाश्म
अशीलता	:	उद्दण्डता
असिलता	:	तलवार
अशर	:	बिना बाण
असर	:	प्रभाव
अशक्त	:	निर्बल
असक्त	:	उदासीन
अस्त	:	छिपना
अस्तु	:	अच्छा
असक्त	:	उदासीन
आसक्त	:	मोहित

1.	असाध	कठिन	असाधु	दुष्ट
2.	अस्ति	है	अस्थि	हड्डी
3.	अह	दिन	अहि	सर्प
4.	अक्ष	धुरी	अक्षि	आँख
5.	अंश	हिस्सा	अंस	कंधा
6.	अंगना	स्त्री	आँगन	आँगन
7.	अदृश्य	जो दिखाई न दे	अदृष्ट	भाग्य
8.	अभिसार	छिपकर मिलना	अभीसार	आक्रमण
9.	अयश	बदनामी	अयस	लोहा
10.	आभनन्दन	स्वागत	अभिवादन	नमस्कार
11.	आदि	प्रारम्भिक	आदी	आदत वाला
12.	आधि	मानसिक कष्ट	व्याधि	शारीरिक कष्ट
13.	आकर	खान	आकार	बनावटध्रूप
14.	आपाद	पैर तक	आपात्	आकस्मिक
15.	आदि	प्रारम्भिक	आदी	आदत वाला
16.	आधि	मानसिक कष्ट	व्याधि	शारीरिक कष्ट
17.	आकर	खान	आकार	बनावटध्रूप
18.	आपाद	पैर तक	आपात्	आकस्मिक
19.	आदि	प्रारम्भिक	आदी	आदत वाला
20.	आधि	मानसिक कष्ट	व्याधि	शारीरिक कष्ट
21.	आकर	खान	आकार	बनावटध्रूप
22.	आपाद	पैर तक	आपात्	आकस्मिक
23.	आभरण	आभूषण	आवरण	पर्दा
24.	आभरण	आभूषण	आमरण	मृत्युपर्यन्त
25.	आयत	आकृति विशेष	आयात	बाहर से मांगना
26.	आय	आमदनी	आयु	उम्र
27.	आयास	श्रम	आवास	घर
28.	आरति	विराम	आरती	पूजा
29.	आरि	जिद्द	आरी	काटने का औजार
30.	आहुत	हवन सामग्री	आहूत	बुलाया हुआ
31.	आवृत्त	ढका हुआ	आवृत्ति	दोहराना
32.	आस्तिक	ईश्वर को मानने वाला	आस्तीक	ऋषि विशेष
33.	इति	समाप्ति	ईति	दैविक आपदा
34.	इतर	अन्यधभिन्न	इत्र	सुगन्धित पदार्थ
35.	उक्ति	कथन	युक्ति	दलील
36.	उदात्त	उच्च	उदार	दानी
37.	उत्पल	कमल	उपल	पत्थर, ओले
38.	उपयोग	व्यवहार मे लेना	उपभोग	भोगना
39.	उधार	ऋण	उद्धार	मोक्ष

40.	उद्यम	श्रम	ऊधम	शरारत
41.	उपयुक्त	उचित	उपर्युक्त	ऊपर कहा हुआ
42.	उपादान	सामग्री	उपधान	तकिया
43.	उद्धरण	उतारना	उदाहरण	दृष्टान्त
44.	उर	हृदय	ऊरू	जाँघ
45.	ओटना	बिनौले अलग करना	औटाना	खौलना
46.	ओट	आड	ओठ	होंठ
47.	ओर	तरफ	और	दूसरा
48.	कच	बाल	कुच	स्तन
49.	कटक	सेना	कटक	काँटा
50.	कटिबन्ध	कमर का आभूषण	कटिबद्ध	तैयार
51.	कपट	छल	कपाट	द्वार
52.	कर्ण	कान	करण	साधन
53.	कथा	कहानी	कंथा	गुदड़ी
54.	कर्म	काम	क्रम	सिलसिला
55.	कलि	कलयुग	कली	कलिका
56.	कलुष	पाप	कुलिश	वज्र
57.	कलश	घट	कलुष	पाप
58.	कान	कर्ण	कानि	मर्यादा
59.	काय	शरीर	निकाय	समूह/राशि
60.	कान्ति	चमक	क्रान्ति	परिवर्तन
61.	कुल	वंश/सब	कूल	किनारा
62.	कुण्डल	कान का आभूषण	कुन्तल	बल
63.	केत	घर	केतु	ध्वज
64.	कच	स्तन	कूंच	प्रस्थान
65.	कोसल	अवध	कौशल	निपुणता
66.	कोर	किनारा	कौर	ग्रास
67.	कंगाल	गरीब	कंकाल	अस्थि–पंजर
68.	गर्व	अभिमान	गर्भ	आन्तरिक भाग
69.	ग्रह	नक्षत्र	गृह	घर
70.	ग्रंथि	गाँठ	ग्रन्थी	गुरूग्रंथ पढने वाला
71.	गुरु	शिक्षक	गुर	उपाय
72.	गेय	गाने योग्य	ज्ञेय	जानने योग्य
73.	घट	घडा	घाट	किनारा
74.	घन	बादल	घण	हथौडा
75.	चतुष्पद	चौपाया	चतुष्पथ	चौराहा
76.	चपल	चंचल	चपला	बिजली
77.	चर्म	चमडा	चरम	अन्तिम
78.	चिर	सदैव	चीर	वस्त्र

79.	चिन्ता	सोच	चिता	मृतक दाहाग्नि
80.	चरित	जीवनी	चरित्र	आचरण
81.	छात्र	विद्यार्थी	क्षात्र	क्षत्रिय सम्बन्धी
82.	जगत्	संसार	जगत	कुएँ की मुण्डेर
83.	तर्क	बहस / युक्ति	तक्र	छाछ
84.	तरणि	सूर्य	तरणी	नाव
85.	तरंग	लहर	तुरंग	घोडा
86.	दशा	हालात	दिशा	तरफ
87.	दिन	दिवस	दीन	गरीब / असहाय
88.	दिवा	दिन	दीवा	दीपक
89.	दुति	चमक	दूती	संदेशवाहिका
90.	दूत	संदेशवाहक	द्यूत	जुआ
91.	देव	देवता	दैव	भाग्य
92.	धरा	पृथ्वी	धारा	नदी / प्रवाह
93.	धनु	धनुष	धेनु	गाय
94.	नाक	स्वर्ग / नासिका	नाग	हाथी / सर्प
95.	निर्जर	देवता	निर्झर	झरना
96.	निधन	मृत्यु	निर्धन	गरीब
97.	निन्दा	बुराई	निद्रा	नींद
98.	निदेश	आज्ञां	निर्देश	निरूपण / दिशा निर्देश
99.	निर्माण	रचना	निर्वाण	मोक्ष
100.	नियंत्रण	बन्धन	निमन्त्रण	न्यौता
101.	निश्छल	छल रहित	निश्चल	अचल
102.	नीर	पानी	नीड	घोंसला
103.	परिणत	रूपान्तर	परिणीत	विवाहित
104.	परवाह	चिन्ता	प्रवाह	बहाव
105.	पहर	समय	प्रहार	चोट
106.	परिधान	वस्त्र	प्रधान	मुख्य
107.	परिवर्तन	रूपान्तर	प्रवर्तन	संचालन / प्रारंभ
108.	परूष	कठोर	पुरुष	व्यक्ति
109.	परिणाम	फल	परिमाण	नाप तोल
110.	पर्यंक	पलंग	पर्यन्त	सीमा तक
111.	प्रमाण	सबूत	प्रणाम	नमस्कार
112.	प्रसाद	कृपा / भोग	प्रासाद	राजमहल
113.	प्रवाद	जनश्रुति	प्रमाद	भूलचूक / आलस्य
114.	प्रकार	ढंग / भेद	प्राकार	परकोटा
115.	प्रथा	रीति	पृथा	कुन्ती
116.	प्रेषक	भेजने वाला	प्रेक्षक	देखने वाला

117.	प्रभाव	असर	प्रवाह	बहाव
118.	प्रतीप	विपरीत	प्रदीप	दीपक
119.	प्रश्न	सवाल	प्रसन्न	खुश
120.	पुष्कर	जलाशय / तीर्थराज	पुष्कल	अत्यधिक
121.	पानी	जल	पाणि	हाथ
122.	पायस	खीर	पावस	वर्षा ऋतु
123.	पेय	पीने योग्य	प्रेय	प्रिय
124.	पंक	कीचड	पंख	पर
125.	बदन	शरीर	वदन	मुँह
126.	बलि	भेंट	बली	बलदान
127.	बहु	बहुत	बहू	वधू
128.	शप्त	शाप दिया हुआ	सप्त	सात
129.	शती	सौ वर्ष	सती	पतिव्रता स्त्री
130.	सदेह	सशरीर	संदेह	शंका
131.	समान	बराबर	सम्मान	इज्जत
132.	सर्वदा	हमेशा	सर्वथा	बिल्कुल
133.	सिल	पत्थर	सील	मुहर, नमी
134.	सिता	मिश्री	सीता	जानकी
135.	सुत	पुत्र	सूत	धागा / सारथी
136.	स्वागत	अपना कथन	स्वागत	आदर
137.	सुधा	अमृत	क्षुधा	भूख
138.	हर	महादेव	हरि	विष्णु
139.	हरि	विष्णु	हरी	हरे रंग की
140.	ह्रास	हानि	हास	हँसी
141.	क्षिति	पृथ्वी	क्षति	हानि
142.	हेम	स्वर्ण	होम	यज्ञ
143.	हंस	मराल (एक पक्षी विशेष)	हँस	हँसना

समास

- समास शब्द का अर्थ – संक्षिप्त या छोटा करना है।
- दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं।
- इस मेल में विभक्ति चिह्नों का लोप होता है।
- समास शब्द 'सम् + आस' के योग से बना है।
  यहाँ 'सम्' का अर्थ – समीप
  एवं 'आस' का अर्थ – बैठना
  अर्थात् दो या दो से अधिक पदों का पास–पास आकर बैठ जाना या आपस में मिल जाना ही समास कहलाता है।
  जैसे – गौ के लिए शाला – गौशाला
- इस प्रकार दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से विभक्ति चिह्नों के कारण जो नवीन शब्द बनते हैं उन्हें सामासिक या समस्त पद कहते हैं।
- सामासिक शब्दों का संबंध व्यक्त करने वाले विभक्ति चिह्नों आदि के साथ प्रकट करने या लिखने वाली रीति को 'विग्रह' कहते हैं।
  जैसे – 'धनसंपन्न' समस्त पद का विग्रह 'धन से संपन्न'
  'रसोईघर' समस्त पद का विग्रह 'रसोई के लिए घर'
- समस्त पद में मुख्यतः दो पद होते हैं – पूर्वपद व उत्तरपद।
  पहले वाले पद को 'पूर्वपद' व दूसरे पद को 'उत्तरपद' कहते हैं।

समस्त पद	**पूर्वपद**	**उत्तरपद**	**समास विग्रह**
पूजा घर	पूजा	घर	पूजा के लिए घर
माता–पिता	माता	पिता	माता और पिता
नवरत्न	नव	रत्न	नौ रत्नों का समूह
हस्तगत	हस्त	गत	हस्त में गया हुआ
रसोई घर	रसोई	घर	रसोई के लिए घर

समस्त पद एवं समास विग्रह – दो या दो से अधिक शब्दों को आपस में जोड़ देना ही समस्त पद या समास होता है व आपस में जुड़े हुए शब्दों को तोड़ना या अलग करना समास विग्रह कहलाता है।
समास विग्रह करते समय 'मूल' शब्द का ही प्रयोग होता है।

नोट –
पर्यायवाची शब्द को समास विग्रह में उपयोग मे नहीं लिया जाता है।

क्र.सं.	**समास या समस्त पद**	**समास विग्रह**
1.	यथा समय	समय के अनुसार
2.	बेखबर	बिना खबर के
3.	ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ
4.	यशप्राप्त	यश को प्राप्त

समास के भेद – एक समास में कम से कम दो पदों का योग अवश्य होता है।
समास के उन दो पदों में से किसी एक पद का अर्थ प्रमुख होता है। अर्थ की इसी प्रधानता के अनुसार समास के प्रमुखतः चार भेद होते हैं।

उनकी प्रधानता अथवा अप्रधानता के विभागत्व के अनुसार ये भेद किए गए हैं।

1. जिस समास में पहला शब्द प्रायः प्रधान होता है, उसे 'अव्ययीभाव' समास कहते हैं।
2. जिस समास में दूसरा शब्द प्रधान होता है, उसे 'तत्पुरुष' समास कहते हैं।
3. जिस समास में दोनो शब्द प्रधान होते हैं, उसे द्वंद्व समास कहते हैं।
4. जिस समास में कोई भी शब्द प्रधान नहीं होता है उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

समास के प्रमुख भेद इस प्रकार है–

1. पहला पद प्रधान – अव्ययीभावी समास
2. दूसरा पद प्रधान – तत्पुरुष समास

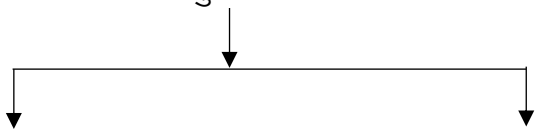

कर्मधारय समास द्विगु समास

नोट –

कर्मधारय व द्विगु समास दोनों में द्वितीय पद ही प्रधान होता है।

अतः इन दोनों समासों को मुख्य भेदों में शामिल न कर इन दोनों को तत्पुरुष समास के उपभेदों में शामिल किये जाते हैं।

3. दोनों पद प्रधान – द्वंद्व समास
4. अन्य पद प्रधान – बहुव्रीहि समास

1. **अव्ययीभाव समास** – इस समास में परिवर्तनशीलता का भाव होता है और उस अव्यय पद का का रूप, लिंग, वचन, कारक में नहीं बदलता है व सदैव एकसा रहता है व पहला पद प्रधान होता है। इस समास में प्रथम पद कोई उपसर्ग या अव्यय शब्द होता है व इस समास में एक पद का भी प्रायः दोहराव होता रहता है लेकिन ज्ञात रहे यदि दोहराव वाले पद में युद्धवाचक अर्थ (योद्धा) प्रकट हो रहा हो तो वहाँ पर बहुव्रीहि समास माना जाता है।

उदाहरण

	समस्त पद	**विग्रह**
1.	बेखबर	बिना खबर के
2.	प्रतिदिन	हर दिन
3.	भरपेट	पेट भरकर
4.	आजन्म	जन्म से लेकर
5.	आमरण	मरणतक
6.	यथासमय	समय के अनुसार
7.	प्रत्याशा	आशा के बदले आशा
8.	प्रतिक्षण	हर क्षण
9.	बेवजह	वजह से रहित

अपवाद – हिंदी के कई ऐसे शब्द या समस्त पद जिनमें कोई शब्द अव्यय नहीं होता है परन्तु समस्त पद अव्यय की तरह प्रयुक्त होता है वहाँ भी अव्ययीभाव समास माना जाता है–

जैसे –

घर – घर	घर के बाद घर
रातों रात	रात ही रात में

अव्ययीभाव समास के प्रमुख नियम

आ/यावत, यथा, प्रति, बा/स, बे/ला/निस्/निर्/नि आदि उपसर्ग होने पर–

1. ''मूल शब्द + तक''
   जैसे – आजीवन – जीवन रहने तक
2. ''मूल शब्द + के अनुसार''
   जैसे – यथायोग्य – योग्यता के अनुसार
3. ''हर + मूल शब्द''
   जैसे – प्रतिपल – हर पल
4. ''मूल शब्द + के सहित''
   जैसे – सशर्त – शर्त के सहित
5. ''मूल शब्द + से रहित''
   जैसे – बेशर्म – शर्म से रहित

अकारण	बिना कारण के
अनजाने	बिना जानकर
यथास्थिति	जैसी स्थिति है
यथामति	जैसी मति है
यथा विधि	जैसी विधि निर्धारित है
नगण्य	न गण्य

2. तत्पुरुष समास – इस समास में पहला पद गौण व दूसरा पद प्रधान होता है।
इस समास में कारक के विभक्ति चिह्नों का लोप हो जाता है (कर्ता व संबोधन कारक को छोड़कर) इसलिए छह कारकों के आधार पर इस समास के 6 भेद हैं–

(i) कर्म तत्पुरुष समास – इस समास में 'को' विभक्ति चिह्नों का लोप रहता है।

जैसे

ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ
आपत्तिजनक	आपत्ति को जन्म देने वाला
आत्मविस्मृत	आत्म को विस्मृत
सर्वप्रिय	सर्व को प्रिय
यशप्राप्त	यश को प्राप्त
पदप्राप्त	पद को प्राप्त
आदर्शोन्मुख	आदर्श को उन्मुख
शरणागत	शरण को आया हुआ
ख्यातिप्राप्त	ख्याति को प्राप्त
क्रमागत	क्रम को आगत

(ii) करण तत्पुरुष समास – इस समास में समास विग्रह करने पर 'से' चिह्न का लोप होता है व 'के द्वारा' का भी लोप होता है।

जैसे

भावपूर्ण	भाव से पूर्ण
बाणाहत	बाण से आहत
अभावग्रस्त	अभाव से ग्रस्त
हस्तलिखित	हस्त से लिखित
बाढ़ पीड़ित	बाढ से पीड़ित
गुणयुक्त	गुण से युक्त
चिंताव्याकुल	चिंता से व्याकुल
ईश्वरदत्त	ईश्वर द्वारा दत्त
आँखों देखी	आँखों द्वारा देखी हुई

(iii) संप्रदान तत्पुरुष समास – इस समास में 'के लिए' चिह्न का लोप होता है।

जैसे –

गुरुदक्षिणा	गुरु के लिए दक्षिणा
राहखर्च	राह के लिए खर्च
बालामृत	बालकों के लिए अमृत
युद्धभूमि	युद्ध के लिए भूमि
कर्णफूल	कर्ण के लिए फूल
विद्यालय	विद्या के लिए आलय
धुड़साल	घोड़ो के लिए साल
महँगाई – भत्ता	महँगाई के लिए भत्ता
छात्रावास	छात्राओं के लिए आवास
सभाभवन	सभा के लिए भवन
रोकड़बही	रोकड़ के लिए बही
हवन कुण्ड	हवन के लिए कुण्ड
हवन सामग्री	हवन के लिए सामग्री
विद्युत्गृह	विद्युत् के लिए गृह
समाचार पत्र	समाचार के लिए पत्र

(iv) अपादान तत्पुरुष समास – इस समास में 'से' पृथक या अलग के लिए चिह्न का लोप होता है।

जैसे –

अवसरवंचित	अवसर से वंचित
देशनिकाला	देश से निकाला
बंधनमुक्त	बंधन से मुक्त
पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट
कामचोर	काम से जी चुराने वाला
कर्त्तव्य विमुख	कर्त्तव्य से विमुख
जन्मांध	जन्म से अंधा
गुणातीत	गुणों से अतीत
ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त
आशातीत	आशा से अतीत
गुणरहित	गुण से रहित
गर्वशून्य	गर्व से शून्य
जन्मरोगी	जन्म से रोगी
जातबाहर	जाति से बाहर
जलरिक्त	जल से रिक्त

(v) संबंध तत्पुरुष समास – यह समास का, के, की लोप से बनने वाला समास है।

जैसे –

गंगाजल	गंगा का जल
नगरसेठ	नगर का सेठ
आत्महत्या	आत्म की हत्या
कार्यकर्ता	कार्य कर कर्ता
गोमुख	गो का मुख
मतदाता	मत का दाता
राजमाता	राजा की माता
जलधारा	जल की धारा

पथपरिवहन	पथ का परिवहन
भूकंप	भू का कंप
मंत्रिपरिषद्	मंत्रियों की परिषद्
मृत्युदंड	मृत्यु का दंड
रक्तदान	रक्त का दान
विद्यार्थी	विद्या का अर्थी
शांतिदूत	शांति का दूत

(vi) अधिकरण तत्पुरुष समास – इस समास में 'में' 'पर' चिह्नों का लोप होता है।

जैसे –

जलमग्न	जल में मग्न
कर्मनिष्ठ	कर्म में निष्ठ
आपबीती	आप पर बीती
घुड़सवार	घोड़े पर सवार
सिरदर्द	सिर में दर्द
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश
ग्रामवासी	ग्राम मे वास करने वाला
जलयान	जल पर चलने वाला यान
जलपोत	जल पर चलने वाला पोत
गंगास्नान	गंगा में स्नान
कार्य कुशल	कार्य में कुशल
कलानिपुण	कला में निपुण
आत्मविश्वास	आत्म पर विश्वास
ईश्वराधीन	ईश्वर पर अधीन
अश्वारूढ	अश्व पर आरूढ

नञ् तत्पुरूष समास – यदि किसी सामासिक पद में प्रथम पद के रूप में अ/अन/अन् /न/ना उपसर्ग जुड़ा हुआ हो तथा यह उपसर्ग मूल शब्द को विलोम शब्द के रूप में परिवर्तित कर रहे हो तो वहाँ पर नञ् तत्पुरुष समास कहते हैं।
इस समाज का विग्रह करते समय उपसर्ग को हटाकर 'न' शब्द जोड़ दिया जाता है।

जैसे –

अज्ञान	न ज्ञान
अनन्त	न अन्त
नालायक	न लायक
अनमोल	न मोल

3. द्विगु समास – इस समास का पहला पद संख्यावाचक अर्थाव् गणना बोधक होता है व दूसरा पद प्रधान होता है, क्योंकि इसमें बहुदा यह जाना जाता है कि इतनी वस्तुओं का समूह है।

इस समास के पदों का विग्रह करते समय दोनो पदों को लिखकर अन्त में का समूह/समाहार पद जोड़ दिया जाता हैं।

समस्त पद	विग्रह
1. नवरत्न	नौ रत्नो का समूह
2. अठवाड़ा	आठ दिनों का समूह
3. द्विगु	दो गौओ का समूह
4. शताब्दी	सौ अब्दों (वर्षो) का समूह
5. त्रिभुज	तीन भुजाओ का समूह
6. चौराहा	चार राहों का संगम
7. पंचरात्र	पंच रात्रियों का समूह
8. त्रिमूर्ति	तीन मूर्तियों का समूह
9. तिकोना	तीन कोनों का समूह
10. सिपाही	सि (तीन) पैरों का समूह
11. एकतरफ	एक ही तरफ है जो
12. अष्टधातु	आठ धातुओं का समूह
13. त्रिलोकी	तीन लोकों का समूह
14. शतक	सौ का समूह
15. चौबारा	चार द्वार वाला भवन

अपवाद –

पक्षद्वय	दो पक्षो का समूह
लेखकद्वय	दो लेखकों का समूह
संकलनत्रय	तीन संकलनो का समूह

4. कर्मधारय समास – इस समास के पहले व दूसरे पद में विशेषण विशेष्य अथवा उपमान उपमेय का संबंध होता है।

इस समास में द्वितीय पद प्रधान होता है।

इस समास को समानाधिकरण तत्पुरुष कहते है।

समस्त पद	विग्रह
(i) विशेषण विशेष्य	
महापुरुष	महान् है जो पुरुष
पीतांबर	पीला है जो अंबर
प्राणप्रिय	प्रिय है जो प्राणों को
नीलगगन	नीला है जो गगन
नीलकमल	नीला है जो कमल
महात्मा	महान् है जो आत्मा
श्वेतवस्त्र	श्वेत है जो वस्त्र
नीलोत्पल	नीला है जो उत्पल (कमल)

(ii) उपमान– उपमेय युक्त पद	विग्रह
चंद्रवदन	चंद्रमा के समान वदन
भवसागर	भवरूपी सागर
विद्याधन	विद्यारूपी धन
मृगनयनी	मृग के समान नेत्र वाली
पादार विन्द	अरविन्द के समान हैं जो पाद
चंद्रमुख	चंद्र के समान है जो मुख

(iii) रूपक आलांकारिक युक्त पद	**विग्रह**
मनमंदिर	मनरूपी मंदिर
ताराघट	तारारूपी घट
शोकसागर	सागर रूपी शोक

(iv) सु/कु उपसर्ग से बने पद	**विग्रह**
सुपुत्र	सुष्ठु है जो पुत्र
सुमार्ग	सुष्ठु है जो मार्ग
कुमति	कुत्सित है जो मति
कुपुत्र	कुत्सित है जो पुत्र

5. द्वन्द्व समास – इस समास में दोनों पद समान रूप से प्रधान होते हैं।
इसके दोनों पद योजक – चिह्न द्वारा जुड़े होते हैं व समास विग्रह करने पर 'और', 'या' 'अथवा' तथा 'एवं' आदि लगते हैं।
इस समास के मुख्यतः तीन भेद होते है–

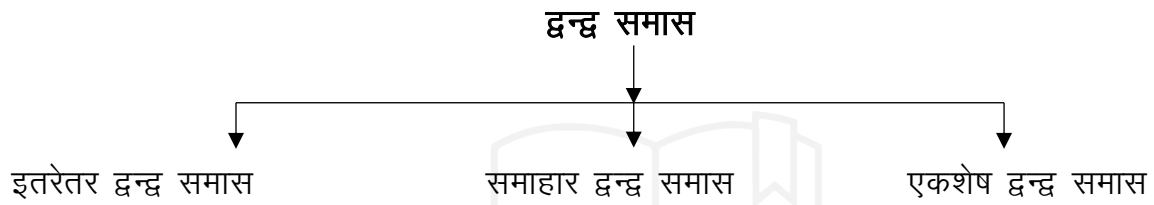

(i) इतरेतर द्वन्द्व समास – इस समास में दो शब्दों का अर्थ होता है व दोनों पद प्रधान होते हैं, साथ में दोनों शब्दों का अर्थ भी अलग–अलग होता है।

अन्न–जल	अन्न और जल
आयात – निर्यात	आयात और निर्यात
दम्पती	दम् (पत्नी) और पति
दूध–रोटी	दूध और रोटी
देश– विदेश	देश और विदेश
दाल–रोटी	दाल और रोटी

(ii) समाहार द्वन्द्व समास – इस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं व दोनों शब्दों का अर्थ दो या दो से अधिक होता है।

आगा – पीछा	आगा, पीछा आदि
कंकर – पत्थर	कंकर, पत्थर आदि
रोक – टोक	रोक, टोक आदि
चाय – पानी	चाय, पानी आदि
खाना – पीना	खाना, पीना आदि
चलता – फिरता	चलता, फिरता,
धल – दौलत	धन, दौलत आदि

नोट – एक से 10 तक की संख्याओ का छोड़कर व 10 से भाज्य संख्या को छोड़कर अन्य सभी संख्यावाची शब्दों में समाहार द्वन्द्व समास होगा।

सैंतीस	–	सात और तीस का समाहार
चौबीस	–	चार और बीस का समाहार
तिरासी	–	तीन और अस्सी का समाहार

(iii)एकशेष द्वन्द्व समास – इस समास में विग्रह करने पर तो कई पद होते हैं, परन्तु समस्त पद बनाते समय किसी एक को ही ग्रहण किया जाता है।

सुख–दुःख	सुख या दुःख
आज – कल	आज या कल
हानि – लाभ	हानि या लाभ
गमनागमन	गमन या आगमन
गुण – दोष	गुण या दोष

6. **बहुव्रीहि समास –** इस समास में पूर्वपद व उत्तरपद दोनों ही गौण होते हैं व अन्य पद प्रधान होता है व शाब्दिक अर्थ को छोड़कर एक नया अर्थ निकलता है।
जैसे – लंबोदर – लंबा है उदर (पेट) जिसका इस शब्द में दोनों पदों का अर्थ प्रधान न होकर अन्यार्थ 'गणेश' शब्द प्रधान है।

समस्त पद	**समास विग्रह**
घनश्याम	घन जैसा श्याम अर्थात् कृष्ण
नीलकंठ	नीला कंठ है जिसका अर्थात् शिव
दशमुख	दश मुख हैं जिसके अर्थात् रावण
महावीर	महान् है जो वीर अर्थात् हनुमान
हंसवाहिनी	हंस है वाहन जिसका अर्थात् सरस्वती
वज्रपाणि	वज्र है पाणी में जिसके वह (इन्द्र)
चन्द्रमुखी	चन्द्र के समान है जिसका मुख (सुंदर स्त्री)
गजानन	गज के समान आनन वाला अर्थात् गणेश
दिंगबर	दिशा ही है अंबर जिसका अर्थात् शिव

प्रायः कुछ समासों में एक ही साथ अनेक विशेषताएँ पायी जाती हैं, ऐसी स्थिति सर्वप्रथम बहुव्रीहि समास का ही चयन करें। ज्ञात रहे यदि बहुव्रीहि समास न हो तब हम अन्य समास का चयन कर सकते हैं।

कर्मधारय व बहुव्रीहि समास में अन्तर

कर्मधारय समास में दोनों पदों में विशेषण व विशेष्य व उपमान व उपमेय का संबध होता है, लेकिन बहुव्रीहि समास में दोनो पद प्रधान न होकर कोई अन्य पद प्रधान होता है।

मृगनयन	मृग के समान नयन (कर्मधारय)
नीलकंठ	वह जिसका कंठ नीला है (शिव) – बहुब्रीहि बहुव्रीहि / कर्मधारय
पीताम्बर	बहुव्रीहि / कर्मधारय
पंचवटी	द्विगु / तत्पुरुष
चौमासा	बहुव्रीहि / द्वन्द्व
गजानन	बहुव्रीहि / तत्पुरुष
मनोज	बहुव्रीहि / तत्पुरुष (उपपद)
दशानन	बहुव्रीहि / द्विगु

बहुव्रीहि व द्विगु समास में अन्तर

1. **द्विगु समास –** इस समास में पहला पद संख्यावाची होता है व समस्त पद समूह का बोध प्रकट करता है।
जैसे–
चौराहा – चार राहों का समूह

2. **बहुव्रीहि समास** – इस समास में पहला पद संख्यावाची होता है लेकिन समस्त पद से समूह का बोध न होकर अन्य अर्थ का बोध कराता है।
जैसे–
चतुर्भुज – चार हैं भुजाएँ जिसके (विष्णु)
तिरंगा – तीन हैं रंग जिसमें वह (राष्ट्रध्वज)

समस्त पद	**विग्रह**
प्रधानमंत्री	मंत्रियों मे प्रधान है जो
निर्भय	जो व्यक्ति किसी से भय नहीं खाता हो
अनन्त	अन्त नही जिसका
चक्रधर	चक्र को धारण करने वाला (विष्णु)
अनहोनी	न होने वाली घटना
चंद्रमौली	चंद्र है मौलि पर जिसके (शिव)
सुहासिनी	सुंदर है हंसी जिसकी वह (भारतमाता)
सुकेशी	सुदंर केश (किरणें) हैं जिसकी (चाँद)
कुरूप	असुन्दर रूप वाला
मीनाक्षी	मीन के समान हैं अक्षि जिसका (सुंदर स्त्री)
चन्द्रशेखर	शेखर पर चन्द्र है जिसके (शिवजी)
खगेश	खगों का ईश (गरूड़)
जितेंद्रिय	जीती हैं जिसने इंद्रियाँ (कामना रहित)
अल्पबुद्धि	अल्प है बुद्धि जिसकी (व्यक्ति विशेष)
पीताम्बर	पीत अम्बर (वस्त्र) वाला (श्री कृष्ण)
पतझड़	झड़ते हैं पत्ते जिसमें (ऋतु विशेष)
षडानन	षड (छः) है आनन (मुख) जिसके (कार्तिकेय)
बहुमान	वह व्यक्ति जिसका बहुत मान हो
निरभिमान	वह व्यक्ति जिसमें अभिमान न हो
निर्लेप	किसी वस्तु या विषय में आसक्त न होने वाला विशेष
मयूरवाहन	मयूर की सवारी है जिसकी (कार्तिकेय)
निराधार	वह व्यक्ति जिसे कोई सहारा प्राप्त न हो।
पंकज	पंक में पैदा हो जो (कमल)
निर्भ्रम	जिस व्यक्ति के/ में कोई भ्रम न हो।
कलमुँहा	काला है मुँह जिसका (लांछित व्यक्ति)
आनाकानी	ना करना – टालमटोल करना।